साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कृष्णा सोबती जन्मशती संगोष्ठी का समापन

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित की गई दो दिवसीय कृष्णा सोबती जन्मशती संगोष्ठी का समापन हुआ। दो सत्र आयोजित हुए जो कृष्णा सोबती के कथा साहित्य और उनके स्त्री विमर्श पर केंद्रित थे। कृष्णा सोबती का कथा साहित्य विषयक सत्र गोपेश्वर सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें निधि अग्रवाल, सुधांशु गुप्त एवं सुनीता ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। कृष्णा सोबती का साहित्य और स्त्री विमर्श विषयक सत्र क्षमा शर्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ और उसमें अल्पना मिश्र, सविता सिंह एवं उपासना ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। कृष्णा सोबती के कथा साहित्य पर बोलते हुए निधि अग्रवाल ने कहा कि कृष्णा ने आज से 60-70 साल पहले स्त्री चेतना के बहुआयामी पक्षों को प्रस्तुत किया था,जिसके बारे मे

कृष्णा सोबती की हर रचना पाठकों और आलोचकों का आकर्षित करती थी : सिंह

तब कोई सोचता भी नहीं था। उन्होंने अपनी कहानियों में स्त्री के संघर्षों को तो उकेरा ही बल्कि यह सिद्ध भी किया कि सारे युद्ध स्त्री देह पर ही लड़े जाते हैं। सुधांशु गुप्त ने उनके समकालीन लेखिकाओं मन्नु भंडारी एवं उषा प्रियंवदा से तुलना करते हुए कहा कि मन्नू भंडारी जहां मध्यम वर्ग की विसंगतियां चित्रित करती हैं, वहीं उषा प्रियंवदा विवाहेतर संबंध घर परिवार और रिश्ते-नातों को चित्रित करती हैं, जबकि कृष्णा सोबती अलग राह चुनते हुए स्त्री की दैहिक स्वतंत्रता को अपने कथानकों का केंद्र बनाती है। संभवतः इसलिए उन्हें उग्र नारीवाद का प्रतीक कहा गया। उनके नायक उनकी नायिकाएं ही हैं। बलात्कार और यौन शोषण जैसी आज की दुःप्रवृत्तियों पर वह बहुत पहले सतर्क करती हैं।